अगस्त: 2024

वर्ष : 7 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"हर नागरिक की यह मुख्य ज़िम्मेदारी है कि वह महसूस करे कि उसका देश स्वतंत्र है और देश स्वतन्त्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है" – लौह पुरुष, सरदार पटेल।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का अगस्त 2024 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक हमारे देश की 77वे स्वाधीनता दिवस को समर्पित है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को 77वे स्वाधीनता दिवस की बधाई देता हूँ।

अगस्त का महीना हम सभी भारतवासियों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। यह विशेष माह हमें स्वाधीनता दिवस की याद दिलाता है और एक विशेष अनुभूति से भर देता है जिसमे जोश, राष्ट्रीय भावना, देश के प्रति एक संकल्प, आपसी भाईचारा और सौहार्द आदि शामिल हैं।

संस्थान में 10 जुलाई 2023 को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, किसानों के साथ पारस्परिक संवाद आयोजन किया गया। साथ ही, देश के विभिन्न राज्यों के 8 प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा कामरूप में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2024 का आयोजन

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा 10 जुलाई, 2024 को हाजो (कामरूप (आर) जिला, असम) में "राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस, 2024" मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन निदेशक डॉ. बि. के. दास और क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस. के. माझी के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. सिमांकू बोरा ने आयोजन सचिव की भूमिका निभाई; वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार यादव और डॉ. प्रणब दास ने कार्यक्रम के सह-आयोजन सचिव की भूमिका निभाई। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें जल उद्यमी, मछली पालक, स्थानीय मछुआरे तथा मीडिया प्रतिनिधि शामिल थे। डॉ. ए. के. यादव ने कार्यक्रम में प्रतिभागियों तथा मीडिया कर्मियों का स्वागत किया। उन्होंने दिन भर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया। स्थानीय जल उद्यमी श्री नितुल चौधरी दास ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों का स्वागत किया तथा उनके लिए इस तरह के क्षेत्रीय कार्यक्रम के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। डॉ. एस. के. माझी ने राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के इतिहास तथा महत्व के बारे में बताया। उन्होंने क्षेत्र में आईसीएआर-सीआईएफआरआई के हस्तक्षेप के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने स्थानीय मछुआरों/मछली पालकों को तकनीकी सहायता प्रदान करने का वादा किया। डॉ. पी. दास ने उभरते हुए जलकृषि अभ्यासों पर जोर देते हुए असम के खुले जल मत्स्य पालन तथा जलकृषि क्षेत्र के लिए उपलब्ध विभिन्न

प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. एस. बोरा ने मछली बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी के महत्व तथा देश में नीली क्रांति लाने में इसकी भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने मत्स्य संसाधनों के संरक्षण पर भी जोर दिया। स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधियों ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि आईसीएआर-सीआईएफआरआई के हस्तक्षेप के कारण न केवल असम में बल्कि पूरे क्षेत्र में मछली उत्पादन और मछली किसानों की आय में वृद्धि हुई है। उन्होंने स्थानीय मछली किसानों/मछुआरों से समग्र विकास के लिए जलीय कृषि में एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने आईसीएआर-सीआईएफआरआई को वंचितों तक पहुंचने के लिए मीडिया का समर्थन प्रदान करने का वादा किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. ए. के. यादव द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

स्थानीय किसान प्रतिनिधि ने वैज्ञानिक और तकनीकी मार्गदर्शन, मछली किसानों को प्रशिक्षण और इनपुट सामग्री प्रदान करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान, संस्थान के संसाधन व्यक्तियों ने जलीय कृषि, मछली बीज उत्पादन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, संलग्नक संस्कृति, संस्कृति आधारित मत्स्य पालन, मछली चारा और स्वास्थ्य प्रबंधन, संरक्षण मत्स्य संसाधन और पीएमएसएसवाई कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस पर पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय मत्स्य पालन मंत्री द्वारा किसानों का सम्मान

अन्तर्स्थलीय खुले पानी के क्षेत्र में प्रमुख अनुसंधान संस्थान होने के नाते आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने श्री बिप्लब रॉय चौधरी, मत्स्य विभाग मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार; और श्री गेब्रियल डी. वांगसू, माननीय मंत्री, कृषि, बागवानी, पशुपालन और पशु चिकित्सा और मत्स्य पालन, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, कानूनी मेट्रोलॉजी और उपभोक्ता मामले, अरुणाचल प्रदेश सरकार की गरिमामयी उपस्थिति में कोलकाता एनएएएस चैप्टर के सहयोग से "राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस" मनाया। राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस समारोह में 17 महिला किसानों और इस क्षेत्र के अन्य हितधारकों जैसे उद्यमियों, गैर सरकारी संगठनों और शोधकर्ताओं सहित लगभग 150 मछुआरों और मछली किसानों ने भाग लिया। राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2024 के उपलक्ष्य में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास में योगदान के लिए पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, मणिपुर, केरल, गुजरात, और उत्तर प्रदेश को सम्मानित किया

गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अरुणाचल प्रदेश सरकार के माननीय मंत्री श्री गेब्रियल डी. वांगसू ने दीप प्रज्वलित कर किया। सभा को संबोधित करते हुए श्री गेब्रियल डी. वांगसू ने कहा कि मत्स्य पालन एक उभरता हुआ क्षेत्र है और मछली पालकों/मछुआरों को सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक जानकारी का प्रयोग करना चाहिए। पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य पालन विभाग के मंत्री श्री बिप्लब रॉय चौधरी ने आठ अलग-अलग राज्यों से नामांकित किसानों को सम्मानित किया। अपने भाषण में श्री रॉय चौधरी ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के दायरे के बारे में बात की और सीआईएफआरआई की प्रशंसा की। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, सीआईएफआरआई के तीन प्रकाशनों का विमोचन किया गया। सीआईएफआरआई के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी ने असम के कामरूप जिले के हाजो में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया जिसमें 30 मछुआरों ने भाग लिया। क्षेत्रीय

केंद्र, बैंगलोर ने कर्नाटक के रामनगर जिले के कण्व जलाशय में कतला (लैबियो कैटला), रोहू (लैबियो रोहिता) और कार्नेटिक कार्प (हाइपसेलोबारबस कार्नेटिकस) के फिंगरलिंग्स का भंडारण किया और इस अवसर पर जलाशयों में पिंजरे की पालन प्रथाओं वाली प्रौद्योगिकी की संभावनाओं के बारे में 50 किसानों को जागरूक किया। राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाने का प्राथमिक लक्ष्य मछली पकड़ने के क्षेत्र के लिए फायदेमंद प्रौद्योगिकियों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। मछली पालन के लिए समर्पित दिवस मनाने से वैज्ञानिकों, मछली किसानों और नीति निर्माताओं को आर्थिक विकास, आजीविका सहायता और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक साथ लाया जा सकता है।

मेघालय सरकार के मत्स्य निदेशक के साथ गुफा मत्स्य पालन के विकास पर संवादात्मक बैठक

आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वैज्ञानिकों ने 4 जुलाई, 2024 को शिलांग के मत्स्य निदेशालय, मेघालय सरकार के मत्स्य निदेशक के साथ एक संवादात्मक बैठक में भाग लिया जिसमें राज्य में गुफा मत्स्य पालन की स्थिति पर चर्चा की गई। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के प्रमुख डॉ. एस.के. माझी और डॉ. सिमांकू बोरा, वैज्ञानिक और मेघालय सरकार के मत्स्य निदेशक सुश्री ए. एल. मावलोंग, एमसीएस के साथ-साथ मत्स्य विभाग, मेघालय के अधिकारी भी संवादात्मक बैठक में शामिल हुए। मेघालय की मत्स्य निदेशक सुश्री ए. एल. मावलोंग, एमसीएस ने कहा कि राज्य की गुफा मत्स्य पालन वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक संभावित क्षेत्र है और उन्होंने अनुसंधान और अन्वेषण गतिविधियों को करने में मत्स्य विभाग, मेघालय से आईसीएआर-सीआईएफआरआई को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि राज्य में कई गुफाएँ हैं जो मुख्य रूप से पूर्वी खासी हिल्स और पूर्वी जैंतिया हिल्स जिलों में स्थित हैं और इन संसाधनों का आज तक सबसे कम अन्वेषण किया गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि शोधकर्ताओं ने राज्य की दो गुफाओं, क्रेम उम लाडॉ (पूर्वी खासी हिल्स) और क्रेम चिम्पे (पूर्वी जैंतिया हिल्स) में मछली विविधता का पता लगाया है और इन गुफाओं से एक नई मछली प्रजाति नियोलिसोचिलस पनार की सूचना दी है, जो आज तक दर्ज की गई दुनिया की सबसे बड़ी गुफा मछली है। सभी परिचालन पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, बैठक में यह निर्णय लिया गया कि मछली विविधता और गुफा मत्स्य पालन के अन्य पारिस्थितिक पहलुओं का दस्तावेजीकरण करने के लिए अन्वेषण सर्वेक्षण मानसून के हटने के बाद यानी सितंबर-अक्टूबर तक शुरू किया जा सकता है।

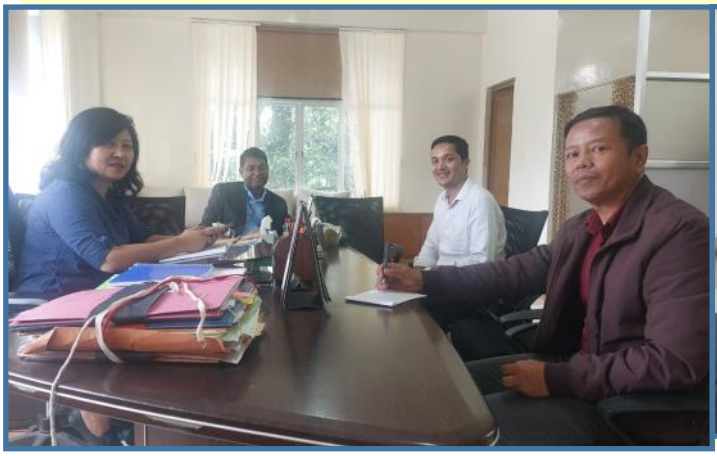

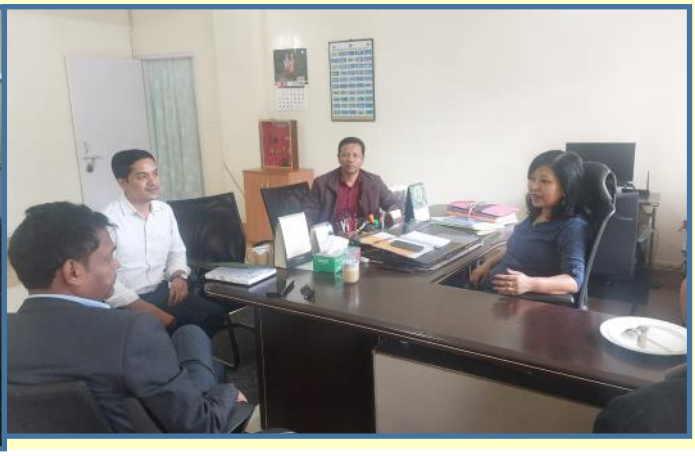

मत्स्य पालन उद्यम के लिए झारखंड के परित्यक्त खुले कोयला खदानों की खोज

जुलाई 2024 में, आईसीएआर-सिफरी की टीम ने झारखंड के रामगढ़ में परित्यक्त कोयला खदानों में मत्स्य पालन पर एक खोजपूर्ण अध्ययन किया कयुँकि कोयला खदानें कई संसाधनों के समृद्ध क्षेत्र है जो अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। "मछली उत्पादन के लिए गड्ढों और खदानों की खोज और व्यवहार्यता अध्ययन" परियोजना के तहत किए गए अध्ययन से पता चला है कि रामगढ़ में 56 परित्यक्त कोयला खदानों को विकास के लिए मत्स्य विभाग को हस्तांतरित कर दिया गया है। मांडू और पतरातू ब्लॉक में कल्चर बेस्ड फिशरीज और केज कल्चर के जरिए इन गड्ढों को मत्स्य पालन के लिए विकसित किया जा रहा है जिनकी गहराई 15 से 50 मीटर तक है। तिलापिया और पंगास मुख्य रूप से संवर्धित प्रजातियां हैं।

टीम ने गहराई, पानी और तलछट की गुणवत्ता, और जैव विविधता का मूल्यांकन किया जिसमें विभिन्न प्रजातियों की पहचान की गई। जिसमें स्टॉक किए गए आईएमसी और तिलापिया के साथ-साथ मास्टेसेम्बेलस आर्मेटस जैसी देशी प्रजातियाँ शामिल हैं। चन्ना

पंक्टाटा, पुंटियस सोफोर, पेथिया कोंचोनियस, पेथिया टिक्टो, सालमोस्टोमा फुलो, रासबोरा डैनिकोनियस और गर्रा प्रजातियाँ। डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. सजीना ए. एम., श्री सुब्रतो दास, और श्री वाई. अली सहित आईसीएआर-सिफरी टीम ने मत्स्य पालन के लिए खुले कोयला खदानों के उपयोग की रणनीतियों पर चर्चा करने के लिए स्थानीय मत्स्य अधिकारियों से मुलाकात की। अनुसंधान सुविधा के लिए विभिन्न साइटों पर मत्स्य विस्तार अधिकारी उनके साथ थे।

जैविक डेटा विश्लेषण के लिए बुनियादी सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण : ऑफ़लाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, प्रयागराज ने 31 जुलाई से 02 अगस्त, 2024 के दौरान "जैविक डेटा विश्लेषण के लिए बुनियादी सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण" पर एक ऑफ़लाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया है। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के निदेशक डॉ बि. के. दास ने किया और आईसीएआर-सीआईएफआरआई के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डॉ आर. के. त्यागी समापन सत्र के दौरान विशेष अतिथि थे। कार्यक्रम में यूपी के विभिन्न जिलों प्रयागराज, अयोध्या, बस्ती, अलीगढ़, और झांसी से आए कुल 23 प्रतिभागियों (13 लड़कियों और 10 लड़कों) ने भाग लिया। विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय, रज्जूभैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज, आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या और राजा महेंद्र प्रताप सिंह राज्य विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के कृषि, मत्स्य पालन, जैव प्रौद्योगिकी आदि विषयों के छात्रों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। डेटा विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, परिकल्पना का परीक्षण, एनोवा, ची स्क्वायर परीक्षण, सहसंबंध और प्रतिगमन, विभिन्न सॉफ्टवेयर जैसे एक्सेल, 'आर' और एसपीएसएस का उपयोग करके प्रतिगमन निदान डॉ मलय नस्कर, डॉ धर्म नाथ झा, डॉ अनिल कुमार यादव और डॉ रोहन रमन द्वारा कवर किया गया। डॉ धर्म नाथ झा, डॉ वी.आर. ठाकुर और श्री जीतेंद्र कुमार कार्यक्रम के समन्वयक थे और इसमें एमडी कासिम और केंद्र के अन्य कर्मचारियों ने सहायता की।

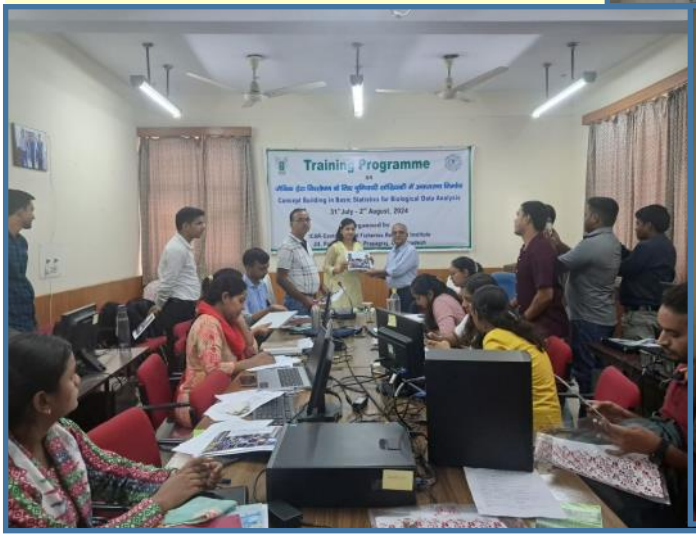

संस्थान ने मुजफ्फरपुर के मनिका मौन और हाजीपुर के बरीला चौर में मछली सुरक्षा और आर्द्रभूमि प्रबंधन पर फील्ड दिवस का आयोजन किया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर ने क्रमशः 24.07.2024 और 25.07.2024 को मुजफ्फरपुर के मनिका मौन और हाजीपुर के बरेला चौर में फील्ड दिवस का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन के बीच मछलियों के लिए सुरक्षित वातावरण, चौर और मौन के प्रबंधन बदलते जल गुणवत्ता और देशी छोटी मछलियों की और पोषक मूल्य से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। किसानों ने कम पैदावार, मछली स्वास्थ्य, जलीय खरपतवारों की वृद्धि और मछली रोगों की घटना जैसे विभिन्न मुद्दों के बारे में अपनी चिंताएँ व्यक्त कीं।

आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिक, मत्स्य पालन महाविद्यालय, ढोली के प्रोफेसर और राज्य मत्स्य अधिकारियों ने चर्चा में भाग लिया। उन्होंने मछुआरों को बेहतर आर्द्रभूमि प्रबंधन प्रथाओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया। आईसीएआर-सिफरी के जलीय पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी प्रमुख डॉ. अर्चना सिन्हा ने छोटी मछलियों के भोजन और पोषण संबंधी महत्व के साथ-साथ उनके सजावटी मूल्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने इन उच्च मूल्य वाली मछलियों के उचित उपयोग पर जोर दिया और मछुआरों को बेहतर आर्द्रभूमि प्रबंधन और मछली स्वास्थ्य मुद्दों पर मार्गदर्शन के लिए आईसीएआर-सिफरी आने के लिए प्रोत्साहित किया।

सीओएफ, ढोली के डॉ. शिवेंद्र कुमार और डॉ. मुकेश कुमार के साथ-साथ मुजफ्फरपुर और हाजीपुर में जिला मत्स्य कार्यालय से श्री अरिजीत कुमार, श्री सिद्धार्थ कुमार, श्री राजीव कुमार, श्री एस.के. प्रभाकर, सुश्री विश्वमणि और श्री धीरेंद्र कुमार ठाकुर ने चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया। फील्ड दिवस का समन्वय आईसीएआर-सिफरी की वैज्ञानिक डॉ. कविता कुमारी ने किया, जिसमें श्री अंजन तालुकदार और श्री देबाशीष सिंहा ने तकनीकी सहायता दी। श्री किशोर साहनी और श्री कुंदन कुमार ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में सजावटी रंगीन मछली वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजन

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व और आईसीएआर-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस.के. माझी के मार्गदर्शन में, केंद्र के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों ने सजावटी मछली पालन के लिए 'डू इट योरसेल्फ (DIY) प्रकार की आउट-स्टेज्ड बायो-फिल्टर रीसर्कुलेटरी एक्वेरियम (OBRA) प्रणाली विकसित की है और इस प्रणाली में क्रूसियन कार्प और गोल्ड फिश का सफलतापूर्वक प्रजनन किया है। इस पहल की सफलता के बाद 23 जुलाई, 2024 को केंद्र में डॉ. सिमंकू बोरा, वैज्ञानिक और श्री बी.सी. रे, एसटीओ की अध्यक्षता में एक "जागरूकता सह मछली (बीज) वितरण कार्यक्रम" आयोजित किया गया। श्री बी.सी. रे, एसटीओ ने प्रजनन कार्यक्रम की पृष्ठभूमि को समझाया और ओबीआरए प्रणाली की कार्यप्रणाली और लाभों पर एक संक्षिप्त अवलोकन साझा किया, जिसके बाद कार्यक्रम में उपस्थित हितधारकों/उद्यमियों के बीच सजावटी मछली के बीज वितरित किए गए। कार्यक्रम में केंद्र के सभी कर्मचारी शामिल हुए। कार्यक्रम में उपस्थित उद्यमियों ने इस पहल के लिए आईसीएआर-सिफरी के प्रति अपना हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त किया और ओबीआरए प्रणाली में रुचि दिखाई। डॉ. सिमंकू बोरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मछली पकड़ने और नदी के किनारे रहने वाले मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के दस्तावेज़ीकरण के लिए नर्मदा नदी का अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण

पवित्र नदी नर्मदा उन कुछ पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में से एक है जो मध्य प्रदेश (1077 किमी), महाराष्ट्र (74 किमी) और गुजरात (161 किमी) राज्यों से होकर बहती है, जिसमें मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बीच की सीमा पर 39 किमी और महाराष्ट्र और गुजरात के बीच 39 किमी की सीमा को साझा करती है।

पूर्व अध्ययनों से पता चलता है कि नर्मदा नदी, मछलियों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के साथ अच्छी स्थिति में है। हालाँकि, कुल मत्स्य पकड़, मत्स्य पकड़ के प्रयासों और पूरी नदी के मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बारे में बहुत कम ही डेटा उपलब्ध है। नदी में मत्स्य पालन को पुनर्जीवित करने के लिये आवश्यक दीर्घकालिक योजना बनाने के लिये आवश्यक सूचनाओं को एकत्रित करने हेतु आईसीएआर-सिफरी की एक वैज्ञानिक टीम ने जुलाई 2024 में मध्य प्रदेश के अमरकंटक में इसके उद्गम से लेकर गुजरात के दाहेज तक पूरे नर्मदा नदी सभी खंड का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 15 जून से 15 अगस्त तक सभी नदी खंडों में मछली पकड़ने पर मत्स्य विभाग द्वारा प्रतिबंध लगाया गया था। जारी प्रतिबंध के बावजूद, टीम ने विभिन्न मछली पकड़ने वाले गांवों से विभिन्न मौसमों में मत्यस पकड़, मछली की विविधता, मछली पकड़ने के जाल और गियर, मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बारे में सफलतापूर्वक जानकारी एकत्र की। विभिन्न मछली पकड़ने की प्रथाओं में, गिल नेट सबसे प्रमुख गियर था, इसके बाद कास्ट नेट, हुक और लाइन, पूल और लाइन्स थे, प्रारंभिक सीपीयूई अनुमान 0.25 से 7.5 किलोग्राम/मछुआरा/दिन था। *रीटा रीटा, क्लूपिसोमा गेरूआ, टोर पुतिटोरा, टोर टोर, सिस्टोमस साराना, लेबियो डायोचिलस, लेबियो बोगट, लेबियो बोगा, लेबियो गोनियस, मास्टासेम्बेलस आर्मेटस, लेपिडोसेफेलिचिस गुंटिया, लेबियो कैटला, लेबियो रोहिता, चन्ना मारुलियस, सिरहिनस मृगला, पुंटियस सोफोर, पेथिया टिक्टो* आदि थे। कैच में सामान्य पाया गया। *साइप्रिनस कार्पियो* और कुछ हद तक *ओरियोक्रोमिस निलोटिकस* शीतकालीन पकड़ में सामान्य कार्प के 20-50% योगदान के साथ दर्ज की गई विदेशी

प्रजातियां थीं।

मछुआरों परिवारों में मत्स्य पकड़ प्रमुख व्यवसाय था। मध्य और निचले हिस्से के मछुआरों की आर्थिक स्थिति ऊपरी हिस्से के मछुआरों की तुलना में बेहतर पाई गई। सर्वेक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, सर्वेक्षण दल ने मध्य प्रदेश सरकार के मत्स्य पालन विभाग के निदेशक से मुलाकात की। मध्य प्रदेश के संबंधित संयुक्त निदेशक और नदी के किनारे पर स्थित जिलों के मत्स्य पालन विभाग के सहायक निदेशक जिन्होंने डेटा संग्रह में टीम को सहयोग किया।

मछली पकड़ने के आंकड़ों, विविधता, मछली पकड़ने के प्रयासों के साथ-साथ मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रामाणिक जानकारी नदी के किनारे मत्स्य पालन की प्रबंधन योजना के लिए पूर्वापेक्षित है। इसके अलावा, वैज्ञानिकों और नदी के किनारे के मछुआरों के बीच इस तरह की सीधी बातचीत न केवल मत्स्य पालन के आंकड़ों को मजबूत करती है बल्कि मछुआरों को नदी के किनारे मत्स्य पालन के महत्व और इसे कैसे संरक्षित किया जाए, इसके बारे में भी जागरूक करती है। सर्वेक्षण टीम का नेतृत्व डॉ. संजीब के. मन्ना, प्रमुख, रिवराइन और एस्टुअरी मत्स्य पालन प्रभाग, डॉ. दिबाकर भक्त, श्री प्रणब गोगोई, श्री मितेश एच. रामटेके, डॉ. कैनसियाल जॉनसन और डॉ. सुहास पी. कांबले, वैज्ञानिकों ने डॉ. बसंत के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी के मार्गदर्शन में किया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस पर कर्नाटक के कण्व जलाशय में मछली के बीज संग्रहित किए

राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 10 जुलाई 2024 को कर्नाटक के रामनगर जिले के कण्व जलाशय में कतला (लेबियो कतला), रोहू (लेबियो रोहिता) और कार्नेटिक कार्प (हाइपसेलोबार्बस कार्नेटिकस) के फिंगरलिंग संग्रहित किए।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक आईसीएआर-सिफरी के मार्गदर्शन में 'जलाशय से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए संस्कृति आधारित

मत्स्य पालन' पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख ने सभा का स्वागत किया और जलाशयों में विभिन्न मत्स्य पालन वृद्धि तकनीकों पर चर्चा की। सुश्री जेसना पी. के. ने जलाशयों में पिंजरे की संस्कृति तकनीक की संभावनाओं पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. राम्या वी. एल. ने स्थानिक मछली प्रजातियों के संरक्षण के महत्व पर विस्तार से बताया। रामनगर जिले के आस-पास के गांवों के तीस मछुआरों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और बातचीत की। डॉ. प्रीता पणिक्कर, सुश्री जेसना पी. के., डॉ. वी. एल. राम्या, डॉ. सिबिना मोल एस. और डॉ. सोनालिका साहू ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वय किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- सर्वेक्षण से पता चलता है कि झारखंड राज्य में प्रचुर मात्रा में खुले कोयला खदानों में पंगेशियानोडोन हाइपोफथाल्मस और मोनोसेक्स ओरियोक्रोमिस निलोटिकस के पिंजरे में पालन की संभावना है।
- बराक नदी के लिए पहली बार वार्षिक मछली पकड़ और प्रति इकाई प्रयास (सीपीयूई) की रिपोर्ट की गई जो क्रमशः 1,593 टन और 5.0 किलोग्राम/गियर/दिन थी।
- पूर्वी कोलकाता वेटलैंड की मछलियों से ओरेक्रोमिस निलोटिकस में वायरल रोग (तिलापिया पार्वोवायरस) देखा गया और एरोमोनस हाइड्रोफिला और एरोमोनस वेरोनी के सह-संक्रमण की भी पुष्टि हुई जिस पर समग्र ध्यान देने की आवश्यकता है।
- जून 2024 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली पकड़ने का अनुमान 14.26 टन लगाया गया था।
- 18 जुलाई 2024 को पश्चिम बंगाल के कोलाघाट में दूरदर्शन केंद्र, कोलकाता द्वारा हिल्सा संस्कृति पर आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक का साक्षात्कार।

बैठक

- निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने 15 जुलाई से 16 जुलाई 2024 तक आईसीएआर, नई दिल्ली में 96वें आईसीएआर स्थापना एवं प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम में भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक ने 13 जुलाई 2024 को आईसीएआर-सीआईएफए, भुवनेश्वर में "राष्ट्रीय मछली किसान दिवस" कार्यक्रम पर "ऑक्सीजन सेंसर-आधारित वातन प्रणाली के विमोचन" में भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक ने 26 जून 2024 को आईसीएआर, नई दिल्ली में वर्ल्डफिश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए सचिव, डेयर और आईसीएआर के महानिदेशक के साथ बैठक में भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 21 जून, 2024 को विश्व योग दिवस मनाया, जिसमें संस्थान के सभी कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 10 जुलाई, 2024 को राष्ट्रीय

मछली किसान दिवस (विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों सहित) मनाया, जिसमें 17 महिला मछली किसानों सहित लगभग 150 मछली किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

अन्य कार्यक्रम

- आईसीएआर-सिफरी ने जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के "नमामि गंगे" की एनएमसीजी परियोजना के तहत 12.07.2024 को सुल्तानगंज, बिहार में और 20 जुलाई 2024 को पटना, बिहार में "राष्ट्रीय पशुपालन कार्यक्रम 2024" का आयोजन किया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने 10 जुलाई 2024 को कृषि दर्शन कार्यक्रम के तहत दूरदर्शन केंद्र, गुवाहाटी द्वारा प्रसारित मत्स्य कृषक दिवस पर एक विशेष कार्यक्रम में भाग लिया।
- 10 जुलाई, 2024 को मछली किसान दिवस के अवसर पर श्री बिप्लब रॉय चौधरी, माननीय मत्स्य पालन मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार और श्री गेब्रियल डी. वांग्सू, माननीय मंत्री, कृषि, बागवानी, पशुपालन और पशु चिकित्सा और मत्स्य पालन, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, कानूनी मेट्रोलॉजी और उपभोक्ता मामले, द्वारा हिंदी में "अंतर्स्थलीय जलनिकायों के लिए मत्स्य पालन और पशु चिकित्सा और मत्स्य पालन, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, कानूनी मेट्रोलॉजी और उपभोक्ता मामले" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया।

प्रशिक्षण

- आईसीएआर-सिफरी ने डेवलपमेंट फाउंडेशन (एनजीओ) के सहयोग से 26-29 जून, 2024 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें ओडिशा के कालाहांडी जिले के 21 किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- सिफरी ने 28 जून, 2024 को भैरव गांगुली कॉलेज, बेलघरिया, पश्चिम बंगाल के बीएससी जूलॉजी (ऑनर्स) तृतीय वर्ष के 29 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जिसमें छात्रों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं के साथ-साथ सिफरी की सजावटी मछली पालन इकाई का भी दौरा किया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 02-08 जुलाई, 2024 के दौरान मुजफ्फरपुर, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें मुजफ्फरपुर जिले, बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 10-16 जुलाई, 2024 के दौरान भागलपुर, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें भागलपुर जिले, बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी, कोच्चि के क्षेत्रीय स्टेशन ने 12 जुलाई, 2024 को भारत सरकार के मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय द्वारा आयोजित 'मत्स्य ग्रीष्मकालीन मीट 2024' में भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 23 जून 2024 को पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना के मीनाखान ब्लॉक में प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) द्वारा वित्त पोषित एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के तहत मछली रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया है। कार्यक्रम में कुल 40 मछुआरों ने भाग लिया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है